श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

नारायण कवच

श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

कवच किया जिसने यह धारण
नारायण उसके भव तारण

नारायणं(न्) नमस्कृत्य, नरं(ञ्) चैव नरोत्तमम् ।
देवीं(म्) सरस्वतीं(वँ) व्यासं(न्), ततो जयमुदीरयेत् ॥

नामसङ्कीर्तनं(यँ) यस्य, सर्वपापप्रणाशनम् ।
प्रणामो दुःखशमनस्, तं(न्) नमामि हरिं(म्) परम् ॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
षष्ठः(स्) स्कंधः
अथाष्टमोऽध्यायः
राजोवाच

यया गुप्तः(स्) सहस्राक्षः(स्), सवाहान् रिपुसैनिकान्।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य, त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम् ॥ 1॥

सहस् + राक्षः(स्), क्रीडन् + निव

भगवं(म्)स्तन्ममाख्याहि, वर्म नारायणात्मकम्।
यथाऽऽततायिनः(श्) शत्रून्, येन गुप्तोऽजयन्मृधे ॥ 2॥

भगवं(म्)स् + तन् + ममाख्याहि, गुप्तोऽ+ जयन् + मृधे

राजा परीक्षित् ने पूछा—भगवन् ! देवराज इन्द्र ने जिस से सुरक्षित होकर शत्रुओं की चतुरङ्गिणी सेना को खेल-खेल में—अनायास ही जीतकर त्रिलोकी की राजलक्ष्मी का उपभोग किया, आप उस नारायण

कवच को मुझे सुनाइये और यह भी बतलाइये कि उन्होंने उससे सुरक्षित होकर रणभूमि में किस प्रकार आक्रमणकारी शत्रुओं पर विजय प्राप्त की।

श्रीशुक उवाच

वृतः(फ्) पुरोहितस्त्वाष्ट्रो, महेन्द्रायानुपृच्छते।

नारायणाख्यं(वँ) वर्माह, तदिहैकमनाः(श्) शृणु ॥ 3॥

पुरो+ हितस् + त्वाष्ट्रो, तदिहै+ कमनाः(श्)

श्रीशुकदेवजी ने कहा—परीक्षित् ! जब देवताओं ने विश्वरूप को पुरोहित बना लिया, तब देवराज इन्द्र के प्रश्न करने पर विश्वरूप ने उन्हें नारायण कवच का उपदेश किया। तुम एकाग्रचित्त से उसका श्रवण करो।

विश्वरूप उवाच

धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य, सपवित्र उदङ्मुखः।

कृतस्वाङ्गकरन्यासो, मन्त्राभ्यां(वँ) वाग्यतः(श्) शुचिः ॥ 4॥

धौताङ्घ्रि+ पाणि+ राचम्य , कृतस्वाङ्+ गकरन् + यासो

नारायणमयं(वँ) वर्म, सन्नह्येद् भय आगते।

पादयोर्जानुनोरूर्वो- रुदरे हृद्यथोरसि ॥ 5॥

पादयोर् + जानुनोरूर्वो, हृद्य+ थोरसि

मुखे शिरस्यानुपूर्व्या- दोङ्कारादीनि विन्यसेत्।

ॐ नमो नारायणायेति, विपर्ययमथापि वा ॥ 6॥

शिरस्या+ नुपूर्+ व्या, विपर् + यय + मथापि

विश्वरूप ने कहा—देवराज इन्द्र ! भय का अवसर उपस्थित होने पर नारायणकवच धारण करके अपने शरीर की रक्षा कर लेनी चाहिये। उसकी विधि यह है कि पहले हाथ-पैर धोकर आचमन करे, फिर हाथ में कुश की पवित्री धारण करके उत्तर मुँह बैठ जाय। इसके बाद कवच धारण पर्यन्त और कुछ न बोलने का निश्चय करके पवित्रता से 'ॐ नमो नारायणाय' और 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'—इन मन्त्रों के द्वारा हृदयादि अङ्गन्यास तथा अङ्गुष्ठादि-कर न्यास करे। पहले 'ॐ नमो नारायणाय' इस अष्टाक्षर मन्त्र के ॐ आदि आठ अक्षरों का क्रमशः पैरों, घुटनों, जाँघों, पेट, हृदय, वक्षःस्थल, मुख और सिर में न्यास करे।अथवा पूर्वोक्त मन्त्र के मकार से लेकर ॐ कारपर्यन्त आठ अक्षरों का सिर से आरम्भ करके उन्हीं आठ अङ्गों में विपरीत क्रम से न्यास करे।

करन्यासं(न्) ततः(ख्) कुर्याद्, द्वादशाक्षरविद्यया।
प्रणवादियकारान्त- मङ्गुल्यङ्गुष्ठपर्वसु ॥ 7॥

द्वादशा+ क्षर+ विद्यया, मङ्गुल्यङ् + गुष्ठ + पर्वसु

तदनन्तर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'—इस द्वादशाक्षर मन्त्र के ॐ आदि बारह अक्षरों का दायीं तर्जनी से बायीं तर्जनीतक दोनों हाथ की आठ अँगुलियों और दोनों अँगूठों की दो-दो गाँठों में न्यास करे।

न्यसेद्धृदय ओङ्कारं(वँ्), विकारमनु मूर्धनि।
षकारं(न्) तु भ्रुवोर्मध्ये, णकारं(म्) शिखया दिशेत् ॥ 8॥

न्यसेद् + धृदय, भ्रुवोर् + मध्ये

वेकारं(न्) नेत्रयोर्युञ्ज्यान्- नकारं(म्) सर्वसन्धिषु।
मकारमस्त्रमुद्दिश्य, मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः ॥ 9॥

नेत्रयोर् + युञ्ज्यान्, मकार+ मस्त्र+ मुद्दिश्य

सविसर्गं(म्) फडन्तं(न्) तत्, सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्।
ॐ विष्णवे नम इति ॥ 10॥

विनिर्+ दिशेत्

फिर 'ॐ विष्णवे नमः' इस मन्त्र के पहले अक्षर 'ॐ' का हृदय में 'वि' का ब्रह्मरन्ध्र में, 'ष्' का भौंहों के बीच में, 'ण' का चोटी में, 'वे' का दोनों नेत्रों में और 'न' का शरीर की सब गाँठों में न्यास करे। तद नन्तर 'ॐ मः अस्त्राय फट्' कह कर दिग्बन्ध करे। इस प्रकार न्यास करने से इस विधि को जानने वाला पुरुष मन्त्र स्वरूप हो जाता है।

आत्मानं(म्) परमं(न्) ध्यायेद्, ध्येयं(म्) षट्शक्तिभिर्युतम्।
विद्यातेजस्तपोमूर्ति- मिमं(म्) मन्त्रमुदाहरेत् ॥ 11॥

षट्+ शक्ति+ भिर्+ युतम् , विद्या+ तेजस्+ तपो+ मूर्ति

इसके बाद समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी ज्ञान और वैराग्य से परिपूर्ण इष्टदेव भगवान् का ध्यान करे और अपने को भी तद्रूप ही चिन्तन करे। तत्पश्चात् विद्या, तेज और तपःस्वरूप इस कवच का पाठ करे।

ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां(न्),
न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः(फ्) पतगेन्द्रपृष्ठे।

दरारिचर्मासिगदेषुचाप-

पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः ॥ 12॥

हरिर् + विदध्यान्, न्यस्+ ताङ्घ्रि+ पद्मः(फ्),

दरारि+ चर्मा+ सिगदेषु+ चाप ,दधा+ नोऽष्ट+ गुणोऽष्ट+ बाहुः

'भगवान् श्रीहरि गरुडज़ी की पीठ पर अपने चरण कमल रखे हुए हैं। अणिमादि आठों सिद्धियाँ उनकी सेवा कर रही हैं। आठ हाथों में शङ्ख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, बाण, धनुष और पाश (फंदा) धारण किये हुए हैं। वे ही ॐकार स्वरूप प्रभु सब प्रकार से, सब ओर से मेरी रक्षा करें।

जलेषु मां(म्) रक्षतु मत्स्यमूर्तिर्-

यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात्।

स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात्,

त्रिविक्रमः(ख्) खेऽवतु विश्वरूपः ॥ 13॥

माया+ वटु+ वामनोऽव्यात्

मत्स्यमूर्ति भगवान् जल के भीतर जल जन्तुओं से और वरुण के पाशसे मेरी रक्षा करें। माया से ब्रह्मचारी का रूप धारण करने वाले वामन भगवान् स्थल पर और विश्वरूप श्री त्रिविक्रम भगवान् आकाश में मेरी रक्षा करें।

दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः(फ्),

पायान्नृसिं(म्)होऽसुरयूथपारिः।

विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं(न्),

दिशो विनेदुर्न्यपतं(म्)श्च गर्भाः ॥ 14॥

दुर्गेष् + वटव्या+जिमुखा+ दिषु, पायान्+ नृसिंहोऽ+ सुरयूथ+ पारिः , विनेदुर्+ न्य+ पतं(म्)श्च

जिन के घोर अट्टहास से सब दिशाएँ गूँज उठी थीं और गर्भवती दैत्यपत्नियों के गर्भ गिर गये थे,वे दैत्य-यूथपतियों के शत्रु भगवान् नृसिंह किले, जंगल, रण भूमि आदि विकट स्थानों में मेरी रक्षा करें।

रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः(स्),

स्वदं(म्)ष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः।

रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे,

सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान् ॥ 15॥

स्वदंष्ट्र+ योन् + नीत+ धरो, रामोऽद्रि+ कूटेष्+ वथ, भरता+ ग्रजोऽ+ स्मान्

अपनी दाढ़ों पर पृथ्वी को धारण करने वाले यज्ञ मूर्ति वराह भगवान् मार्ग में, परशुराम जी पर्वतों के शिखरों पर और लक्ष्मणजी के सहित भरत के बड़े भाई भगवान् रामचन्द्र प्रवास के समय मेरी रक्षा करें।

मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादान्-

नारायणः(फ्) पातु नरश्च हासात्।

दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः(फ्),

पायाद् गुणेशः(ख्) कपिलः(ख्) कर्मबन्धात् ॥ 16॥

मामुग्र+ धर्मा+ दखिलात्, दत्तस्त्व+ योगा+ दथ

भगवान् नारायण मारण-मोहन आदि भयङ्कर अभिचारों और सब प्रकार के प्रमादों से मेरी रक्षा करें। ऋषिश्रेष्ठ नर गर्व से, योगेश्वर भगवान् दत्तात्रेय योग के विघ्नों से और त्रिगुणाधिपति भगवान् कपिल कर्मबन्धनों से मेरी रक्षा करें।

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवाद्-

धयशीर्षा मां(म्) पथि देवहेलनात्।

देवर्षिवर्यः(फ्) पुरुषार्चनान्तरात्,

कूर्मो हरिर्मां(न्) निरयादशेषात् ॥ 17॥

सनत् + कुमारोऽ+ वतु , पुरुषार् + चनान् + तरात्, निरया+ दशेषात्

परमर्षि सनत्कुमार कामदेव से, हयग्रीवभगवान् मार्ग में चलते समय देवमूर्तियों को नमस्कार आदि न करने के अपराध से, देवर्षि नारद सेवापराधों से और भगवान् कच्छप सब प्रकार के नरकों से मेरी रक्षा करें।

धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद्,

द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा।

यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद्,

बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ॥ 18॥

धन्वन्तरिर् + भगवान्, भया+ दृषभो,

लोका+ दवताज् + जनान्ताद्, क्रोध+ वशा+ दहीन्द्रः

भगवान् धन्वन्तरि कुपथ्य से, जितेन्द्रिय भगवान् ऋषभ देव सुख-दुःख आदि भय दायक द्वन्द्वों से, यज्ञ भगवान् लोकापवाद से, बलराम जी मनुष्यकृत कष्टों से और श्रीशेष जी क्रोधवश नामक सर्पों के गण से मेरी रक्षा करें।

द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद् ,
बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात्।
कल्किः(ख्) कलेः(ख्) कालमलात् प्रपातु,
धर्मावनायोरुकृतावतारः ॥ 19॥

भगवान+ प्रबोधाद्, पाखण्ड+ गणात्, धर्मा+ वनायो+ रुकृता+ वतारः

भगवान् श्रीकृष्णद्वैपायन व्यास जी अज्ञान से तथा बुद्धदेव पाखण्डियों से और प्रमाद से मेरी रक्षा करें। धर्मरक्षा के लिये महान् अवतार धारण करने वाले भगवान् कल्कि पापबहुल कलिकाल के दोषों से मेरी रक्षा करें।

मां(ङ्) केशवो गदया प्रातरव्याद्,
गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः।
नारायणः(फ्) प्राह्ण उदात्तशक्तिर्-
मध्यन्दिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ॥ 20॥

प्रात+ रव्याद्, आसङ्गव+ मात्त+ वेणुः, उदात्त+ शक्तिर्, विष्णु+ ररीन्द्र+ पाणिः

प्रातःकाल भगवान् केशव अपनी गदा लेकर, कुछ दिन चढ़ आनेपर भगवान् गोविन्द अपनी बाँसुरी लेकर, दोपहर के पहले भगवान् नारायण अपनी तीक्ष्ण शक्ति लेकर और दोपहर को भगवान् विष्णु चक्रराज सुदर्शन लेकर मेरी रक्षा करें।

देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा,
सायं(न्) त्रिधामावतु माधवो माम्।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे,
निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ॥ 21॥

मधुहो+ ग्रधन्वा, त्रिधामा + वतु

तीसरे पहर में भगवान् मधु सूदन अपना प्रचण्ड धनुष लेकर मेरी रक्षा करें। सायंकाल में ब्रह्मा आदि त्रिमूर्ति धारी माधव, सूर्यास्त के बाद हृषीकेश, अर्धरात्रि के पूर्व तथा अर्धरात्रि के समय अकेले भगवान् पद्मनाभ मेरी रक्षा करें।

श्रीवत्सधामापररात्र ईशः(फ्),
प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः।
दामोदरोऽव्यादनुसन्ध्यं(म्) प्रभाते,
विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ॥ 22॥

श्रीवत्स+ धामा+ पररात्र, दामोदरोऽ+ व्या+ दनु+ सन्ध्यं(म्)

रात्रिके पिछले प्रहर में श्रीवत्सलाञ्छन श्रीहरि, उषाकाल में खड्गधारी भगवान् जनार्दन, सूर्योदय से पूर्व श्रीदामोदर और सम्पूर्ण सन्ध्याओं में कालमूर्ति भगवान् विश्वेश्वर मेरी रक्षा करें।

चक्रं(यँ) युगान्तानलतिग्मनेमि,
भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्।
दन्दग्धि दन्दग्ध्यरिसैन्यमाशु ,
कक्षं(यँ) यथा वातसखो हुताशः ॥ 23॥

युगान्ता+ नल+ तिग् + मनेमि, भगवत् + प्रयुक्तम् , दन्दग्+ ध्यरि+ सैन्य + माशु

'सुदर्शन! आपका आकार चक्र की तरह है। आपके किनारे का भाग प्रलय कालीन अग्नि के समान अत्यन्त तीव्र है। आप भगवान् की प्रेरणा से सब ओर घूमते रहते हैं। जैसे आग वायु की सहायता से सूखे घास-फूस को जला डालती है, वैसे ही आप हमारी शत्रु-सेनाको शीघ्र-से-शीघ्र जला दीजिये, जला दीजिये।

गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे
निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि।
कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षो-
भूतग्रहां(म्)श्चूर्णय चूर्णयारीन् ॥ 24॥

गदेऽ+ शनिस्पर्शन + विस्फुलिङ्गे, निष् + पिण्ढ्य+ जित+ प्रियासि
कूष्माण्ड+ वैनायक+ यक्षरक्षो, भूत+ ग्रहां(म्)श् + चूर्णय

कौमोदकी गदा ! आपसे छूटनेवाली चिनगारियों का स्पर्श वज्र के समान असह्य है। आप भगवान् अजित की प्रिया हैं और मैं उनका सेवक हूँ। इसलिये आप कूष्माण्ड, विनायक, यक्ष, राक्षस, भूत और प्रेतादि ग्रहों को अभी कुचल डालिये, कुचल डालिये तथा मेरे शत्रुओं को चूर-चूर कर दीजिये।

त्वं(यँ) यातुधानंप्रमथंप्रेतमातृ-
पिशाचविंप्रंग्रहघोरदृष्टीन्।
दरेन्द्र विंद्रावय कृंष्णपूरितो,
भीमंस्वनोऽरेर्हृदयानि कंम्पयन् ॥ 25॥

यातुधान+ प्रमथ+ प्रेतमातृ, पिशाच+ विप्र+ ग्रह+ घोरदृष्टीन् , भीम+ स्वनोऽरेर् + हृदयानि

शङ्खश्रेष्ठ ! आप भगवान् श्रीकृष्ण के फूँक ने से भयङ्कर शब्द करके मेरे शत्रुओं का दिल दहला दीजिये एवं यातुधान, प्रमथ, प्रेत, मातृ का, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि भयावने प्राणियों को यहाँसे झट पट भगा दीजिये।

त्वं(न्) तिंग्मधारासिवरारिसैन्य-
मीशंप्रयुंक्तो मम छिंन्धि छिंन्धि।
चंक्षूं(म्)षि चर्मञ्छतचन्द्र छादयं,
द्विषामघोनां(म्) हर पापचंक्षुषाम् ॥ 26॥

तिग्म+ धारा+ सिवरारि+ सैन्य, मीश+ प्रयुक्तो, चर्मञ्+ छत+ चन्द्र , द्विषा+ मघोनां(म्)

आपकी धार बहुत तीक्ष्ण है। आप भगवान् की प्रेरणा से मेरे शत्रुओं को छिन्न-भिन्न कर दीजिये। भगवान् की प्यारी ढाल ! आपमें सैकड़ों चन्द्राकार मण्डल हैं। आप पापदृष्टि पापात्मा शत्रुओं की आँखें बंद कर दीजिये और उन्हें सदा के लिये अन्धा बना दीजिये।

यन्नो भयं(ङ्) ग्रहेभ्योऽभूत्, केतुंभ्यो नृंभ्य एव च।
सरीसृपेभ्यो दं(म्)ष्ट्रिंभ्यो, भूतेभ्यों(म्)ऽहोभ्य एव वा ॥ 27॥

सरी+ सृपेभ्यो

सर्वाण्येतानि भगवन्- नामरूपास्त्रकीर्तनात्।
प्रयान्तु सं(ङ्)क्षयं(म्) सद्यो, ये नः(श्) श्रेयः(फ्) प्रतीपकाः ॥ 28॥

नाम+ रूपास्त्र+ कीर्तनात्

सूर्य आदि ग्रह, धूमकेतु आदि केतु, दुष्ट मनुष्य, सर्पादि रेंगने वाले जन्तु, दाढ़ों वाले हिंसक पशु, भूत-प्रेत आदि तथा पापी प्राणियों से हमें जो-जो भय हों और जो-जो हमारे मङ्गल के विरोधी हों—वे सभी भगवान् के नाम, रूप तथा आयुधों का कीर्तन करने से तत्काल नष्ट हो जायँ।

गरुडो भगवान् स्तोत्रस्, तोभश्छन्दोमयः(फ्) प्रभुः।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो, विष्वक्सेनः(स्) स्वनामभिः ॥ 29॥

तोभश्+ छन्दोमयः, रक्षत्व+ शेष+ कृच्छ्रेभ्यो

बृहद्,रथन्तर आदि सामवेदीय स्तोत्रों से जिनकी स्तुति की जाती है, वे वेद मूर्ति भगवान् गरुड और विष्वक्सेनजी अपने नामोच्चारण के प्रभाव से हमें सब प्रकार की विपत्तियों से बचायें।

सर्वापद्भ्यो हरेर्नाम- रूपयानायुधानि नः।
बुद्धीन्द्रियमनः(फ्) प्राणान्, पान्तु पार्षदभूषणाः ॥ 30॥

रूप+ याना+ युधानि, बुद्धीन्द्रिय + मनः

श्रीहरि के नाम, रूप, वाहन, आयुध और श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि, इन्द्रिय, मन और प्राणों को सब प्रकार की आपत्तियों से बचायें।

यथा हि भगवानेव, वस्तुतः(स्) सदसच्च यत्।
सत्येनानेन नः(स्) सर्वे, यान्तु नाशमुपद्रवाः ॥ 31॥

नाश+ मुपद्रवाः

'जितना भी कार्य अथवा कारण रूप जगत् है, वह वास्तव में भगवान् ही हैं'—इस सत्य के प्रभाव से हमारे सारे उपद्रव नष्ट हो जायँ।

यथैकात्म्यानुभावानां(वँ), विकल्परहितः(स्) स्वयम्।
भूषणायुधलिङ्गाख्या, धत्ते शक्तीः(स्) स्वमायया ॥ 32॥

यथै+ कात्म्या+ नुभावानां(वँ), भूषणा+ युध+ लिङ्गाख्या

तेनैव सत्यमानेन, सर्वज्ञो भगवान् हरिः।
पातु सर्वैः(स्) स्वरूपैर्नः(स्), सदा सर्वत्र सर्वगः ॥ 33॥

जो लोग ब्रह्म और आत्मा की एकता का अनुभव कर चुके हैं, उनकी दृष्टि में भगवान् का स्वरूप समस्त विकल्पों—भेदों से रहित है; फिर भी वे अपनी माया-शक्ति के द्वारा भूषण, आयुध और रूप नामक शक्तियों को धारण करते हैं, यह बात निश्चित रूप से सत्य है। इस कारण सर्वज्ञ, सर्वव्यापक भगवान् श्रीहरि सदा-सर्वत्र सब स्वरूपों से हमारी रक्षा करें।

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः(स्) समन्ता-

दन्तर्बहिर्भगवान् नारसिं(म्)हः।

प्रहापयँल्लोकभयं(म्) स्वनेन,

स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः ॥ 34॥

दिक्षूर्+ ध्वमधः(स्), दन्तर्+ बहिर् + भगवान्

प्रहा+ पयँल्लोक+ भयं(म्),ग्रस्त+ समस्त+ तेजाः

जो अपने भयङ्कर अट्टहास से सब लोगों के भय को भगा देते हैं और अपने तेज से सबका तेज ग्रस लेते हैं, वे भगवान् नृसिंह दिशा-विदिशा में, नीचे-ऊपर, बाहर भीतर सब ओर हमारी रक्षा करें'।

मघवन्निदमाख्यातं(वँ), वर्म नारायणात्मकम्।

विजेष्यस्यञ्जसा येन, दं(म्)शितोऽसुरयूथपान् ॥ 35॥

मघवन् + निद+ माख्यातं(वँ), विजेष् + यस्यञ् + जसा, दं(म्)शितोऽ+ सुर+ यूथपान्

देवराज इन्द्र ! मैंने तुम्हें यह नारायणकवच सुना दिया। इस कवच से तुम अपने को सुरक्षित कर लो। बस, फिर तुम अनायास ही सब दैत्य-यूथपतियों को जीत लोगे।

एतद् धारयमाणस्तु, यं(यँ) यं(म्) पश्यति चक्षुषा।

पदा वा सं(म्)स्पृशेत् सद्यः(स्), साध्वसात् स विमुच्यते ॥ 36॥

धारय+ माणस्तु

इस नारायणकवच को धारण करने वाला पुरुष जिसको भी अपने नेत्रों से देख लेता अथवा पैर से छू देता है, वह तत्काल समस्त भयों से मुक्त हो जाता है।

न कुतश्चिद् भयं(न्) तस्य, विद्यां(न्) धारयतो भवेत्।

राजदस्युग्रहादिभ्यो, व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित् ॥ 37॥

कुतश् + चिद् , राज+ दस्यु+ ग्रहा+ दिभ्यो, व्याघ्रा+ दिभ्यश्च

जो इस वैष्णवी विद्या को धारण कर लेता है, उसे राजा, डाकू, प्रेत-पिशाचादि और बाघ आदि हिंसक जीवों से कभी किसी प्रकार का भय नहीं होता।

इमां(वँ) विद्यां(म्) पुरा कश्चित्, कौशिको धारयन् द्विजः।

योगधारणया स्वाङ्गं(ञ्), जहौ स मरुधन्वनि ॥ 38॥

योग+ धारणया, मरु+ धन्वनि

देवराज ! प्राचीन काल की बात है, एक कौशिक गोत्री ब्राह्मण ने इस विद्या को धारण करके योग धारणा से अपना शरीर मरुभूमि में त्याग दिया।

तस्योपरि विमानेन, गन्धर्वपतिरेकदा।
ययौ चित्ररथः(स्) स्त्रीभिर्- वृतो यत्र द्विजक्षयः ॥ 39॥

गन्धर्व+ पति+ रेकदा

जहाँ उस ब्राह्मण का शरीर पड़ा था, उसके ऊपर से एक दिन गन्धर्वराज चित्ररथ अपनी स्त्रियों के साथ विमान पर बैठकर निकले।

गगनान्न्यपतत् सद्यः(स्), सविमानो ह्यवाक्शिराः।
स वालखिल्यवचना- दस्थीन्यादाय विस्मितः।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां(म्), स्नात्वा धाम स्वमन्वगात् ॥ 40॥

गगनान् + न्य+ पतत्, ह्यवाक् + शिराः, वाल+ खिल्य+ वचना, दस्थीन् + यादाय,
प्राची+ सरस्वत्यां(म्),स्वमन् + वगात्

वहाँ आते ही वे नीचे की ओर सिर किये विमानसहित आकाश से पृथ्वी पर गिर पड़े। इस घटना से उनके आश्चर्य की सीमा न रही। जब उन्हें वालखिल्य मुनियों ने बतलाया कि यह नारायण कवच धारण करने का प्रभाव है, तब उन्होंने उस ब्राह्मण देवता की हड्डियों को ले जाकर पूर्ववाहिनी सरस्वती नदी में प्रवाहित कर दिया और फिर स्नान करके वे अपने लोक को गये।

श्रीशुक उवाच

य इदं(म्) शृणुयात् काले, यो धारयति चादृतः।
तं(न्) नमस्यन्ति भूतानि, मुच्यते सर्वतो भयात् ॥ 41॥

परीक्षित् ! जो पुरुष इस नारायणकवच को समयपर सुनता है और जो आदर पूर्वक इसे धारण करता है, उसके सामने सभी प्राणी आदर से झुक जाते हैं और वह सब प्रकार के भयों से मुक्त हो जाता है।

एतां(वँ) विद्यामधिगतो, विश्वरूपाच्छतक्रतुः।
त्रैलोक्यलक्ष्मीं(म्) बुभुजे, विनिर्जित्य मृधेऽसुरान् ॥ 42॥

विद्या+ मधिगतो, विश्व+ रूपाच् + छत+ क्रतुः, त्रैलोक्य+ लक्ष्मीं(म्), विनिर् + जित्य

परीक्षित् ! शतक्रतु इन्द्र ने आचार्य विश्वरूपजी से यह वैष्णवी विद्या प्राप्त करके रणभूमि में असुरों को जीत लिया और वे त्रैलोक्य लक्ष्मी का उपभोग करने लगे।

॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहं(म्)स्यां(म्) सं(म्)हितायां(म्)
षष्ठस्कन्धे नारायणवर्मकथनं(न्) नामाष्टमोऽध्यायः॥

ॐ पूर्णमदः(फ्) पूर्णमिदं(म्) पूर्णात्पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥
ॐ शान्तिः(श्)शान्तिः(श्)शान्तिः॥